Vol. 8, Issue -2 (July 2019) pp. 53-62
Sangeet Galaxy
ISSN: 2319-9695

Research Contribution in Music

(1)

नाम	डॉ. अमित कुमार वर्मा
शोध विषय	स्वतंत्रता के पश्चात् उत्तर प्रदेश में तबला वादन की संस्थागत शिक्षण प्रणाली का समीक्षात्मक अद्ध्ययन
विश्वविद्यालय	भातखंडे संगीत संस्थान विश्वविद्यालय, लखनऊ
अवार्ड	2010
शोध निर्देशक	प्रो. सुधीर कुमार वर्मा
Email	kr.amitverma@gmail.com

ताल संगीत का प्राण है और तबला ताल को धारण करने वाला आज के दौर का सबसे महत्वपूर्ण तालवाद्य. वर्तमान में गायन की शिक्षा के साथ ही तबला वादन की शिक्षा भी विद्यालयों से लेकर विश्वविद्यालयों तक दी जा रही है. संगीत की संस्थागत शिक्षा के अंतर्गत गायन विषय पर कई शोध कार्य हो चुके है, जबकि तबला विषय की संस्थागत शिक्षा पर इतना ध्यान नही दिया गया जितना अपेक्षित था. तबले के घरानों के विकास से लेकर इसकी संस्थागत शिक्षा के फैलाव की दृष्टि से उत्तर प्रदेश काफी उपजाऊ रहा है. अतः "स्वतंत्रता के पश्चात् उत्तर प्रदेश में तबला वादन की संस्थागत शिक्षण प्रणाली का समीक्षात्मक अद्ध्ययन" शोध विषय के अंतर्गत प्रथम बार इसकी शिक्षा व्यवस्था का मूल्यांकन किए जाने का प्रयास किया गया है.

शोध प्रबंध की प्रमुख विशेषताएँ –

1. शोध प्रबंध स्वतंत्रता से पहले उत्तर प्रदेश में संगीत की संस्थागत शिक्षण प्रणाली का विकास कैसे हुआ, इसका स्पष्ट और क्रमबद्ध इतिहास प्रस्तुत करता है, साथ ही वाराणसी, इलाहबाद, लखनऊ और कानपुर शहरों में स्थापित संगीत संस्थाओं के इतिहास और उसके विकास को रेखांकित करता है.
2. उत्तर प्रदेश के प्रमुख विश्वविद्यालयों और उनसे सम्बद्ध महाविद्यालयों में तबला वादन की शिक्षा व्यवस्था का मूल्यांकन निम्नलिखित बिन्दुओं के अंतर्गत किया गया है – प्रवेश प्रक्रिया, पाठ्यक्रम, प्रयोग व शास्त्र की कक्षाएं, नगमा संगतकर्ता, परीक्षा व्यवस्था, शोध व्यवस्था, प्रतियोगिताएँ, कार्यशालाएं आदि. साथ ही विभिन्न विश्वविद्यालयों के तबला विषय के पाठ्यक्रमों का तुलनात्मक अध्ययन कर विषय से सम्बंधित विसंगतियों को भी उजागर किया गया है.
3. प्रमुख विश्वविद्यालयों और उनसे सम्बद्ध महाविद्यालयों में तबला वादन की शिक्षा व्यवस्था के मूल्यांकन के अतिरिक्त उत्तर प्रदेश के सरकारी और गैर सरकारी विद्यालयों तथा निजी स्तर पर चल रहे संगीत विद्यालयों में तबला वादन की शिक्षा व्यवस्था का भी मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है.
4. स्वतंत्रता पूर्व काल से लेकर वर्ष 2007 तक तबला विषय की पुस्तकों तथा विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों के क्रमिक विकास का समीक्षात्मक अद्ध्ययन किया गया है. इसके अतिरिक्त इन्टरनेट के

माध्यम से दी जाने वाली तबला विषय की शिक्षा की प्रासंगिकता और उसकी उपयोगिता के महत्व को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है.

मूलतः शिक्षा एक गत्यात्मक प्रक्रिया है, जिसमे समयनुसार परिवर्तन होता रहता है. प्रस्तुत शोध कार्य तबला विषय की संस्थागत शिक्षा के मूल्यांकन का प्रथम प्रयास है. यह उत्तर प्रदेश के विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालयों के स्तर तक दी जा रही इसकी शिक्षा व्यवस्था की दशा और दिशा को दर्शाता है साथ ही इसमें आई विसंगतियों के निराकरण के लिए सुझाव भी देता है. जैसे-

1. तबले के विद्यार्थी के लिए कम से कम एक वर्ष गायन की शिक्षा निश्चित तौर से अनिवार्य होनी चाहिए ताकि वह अपने वाद्य को सही से वांछित स्वर में मिला सके.
2. तबला की कक्षाओं के लिए नगमा संगतकर्ता की नियमित व्यवस्था होनी चाहिए.
3. पुस्तकालय उच्च स्तरीय कक्षाओं की आवश्यकताओं तथा शोध की दृष्टि से समृद्ध होना चाहिए.
4. तबला विषय में प्रकाशित महत्वपूर्ण ग्रंथों का अनुवाद अन्य भाषाओँ में भी हो ताकि ज्ञान के प्रसार में भाषा की अज्ञानता बाधा न बने.
5. तबला विद्यार्थियों के प्रयोगात्मक व प्रदर्शनकारी पक्ष को मजबूत बनाने के लिए प्रतियोगिताओं और कार्यशालाओं को नियमित आयोजन होना चाहिए.
6. भातखंडे जी की संगीत शिक्षा निति के अनुसार परीक्षा में अच्छी सफलता प्राप्त करने के लिए कक्षा में नियमित उपस्थिति अनिवार्य है. अतः तबले की शिक्षा को सुद्रढ़ बनाने के लिए तथा परीक्षा के स्तर में सुधार के लिए विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति पर शिक्षक वर्ग को विशेष ध्यान देना चाहिए.
7. अक्सर देखा गया है कि तबले का पाठ्यक्रम शिक्षक और विद्यार्थी दोनों की ओर से उपेक्षित रहता है, जिससे तबले की शिक्षा प्रभावित होती है. पाठ्यक्रम को समयानुसार पूरा कराए जाने पर जोर दिया जाना चाहिए.
8. स्नातक और परास्नातक स्तर पर ली जाने वाली संगीत (तबला) की परीक्षाओं में एक प्रश्न पत्र संगीत के सामान्य ज्ञान का अनिवार्य रूप से होना चाहिए, जिसमे समसामयिक सांगीतिक घटनाओं आदि को भी स्थान दिया जाना चाहिए. जिसका लाभ उसे आगे चलकर नेट की परीक्षा उतीर्ण करने तथा शोध के दौरान मिलेगा.
9. संगीत (तबला) विषय में शिक्षक होने के लिए बी.एड. और एम.एड. के कोर्स होने चाहिए ताकि पहले उन कुशल शिक्षकों का निर्माण कर सके, जिसके द्वारा तबले की शिक्षा का हस्तांतरण नई पीढ़ी में होना है.

सम्बंधित लेख

- https://www.researchgate.net/publication/321685408_Uttar_Pradesh_me_Sangeet_ki_Sansthagat_Shiksha_ka_Vikas_Ek_Vishleshan
- https://www.researchgate.net/publication/322291921_Tabla_Vishay_ki_Pustako_ka_Prakashan_Ek_Vishleshan

(2)

Name	Dr. Gaveesh
Title of the Thesis	Arousing Interest and Making Hindustani Classical Music (North Indian) More Popular Among The Masses: With Special Reference To Khayal Singing Style
University	The Maharaja Sayajirao University of Baroda Vadodara, Gujarat.
Date of Award	17 December 2016
Supervisor	Dr. Ashwini Kumar Singh
Email	raigavish@gmail.com

Main Features of the Thesis and Contribution of Research work:

Imaginative Concept, interpretative theme, gravity of Dhruvapada, romanticism of Thumri and the lyricism of the lighter forms like Dadra and Ghazal makes Khayal immensely interesting and attractive genre of Hindustani Classical music. Although Khayal has a long list of followers who sing, listen and appreciate it all over the world including lot of people from India and abroad, but still a large number of people are there who are unaware of this excellent art form. Being a great admirer of Khayal, scholar firmly believe that Khayal has the potential to spread all over the world. Scholar has always felt that there is a need for a scientific and logical way to approach and study the various aspects of the Khayal. This thesis has been written by putting the above. This thesis has touched every aspect of Khayal starting from historical background. Thesis has tried to approach the study of Khayal from Philosophical, Psychological & Sociological point of view so as to provide an in-depth historical analysis and a pertinent presentation of Khayal. This thesis includes suggestions given by eminent artists and teachers whom scholar got the chance to interview. Thesis also includes data collected by questionnaires distributed to common people, music students and music teachers. Thesis provides various ways and suggestions for arousal of interest and more popularity of Khayal. This thesis provides guidelines for the ideal presentation of Khayal.

This thesis discussed regarding Educating Society regarding benefits of Classical Music, Therapeutic effect of Hindustani Ragas, Imparting Music education to kids, New instruments and their use in Khayal, New experiments like Fusion, Light, sound & Multi-Media effects etc. Time of performance of Khayal. This thesis provides suggestions and precautions given by experienced music teachers, performers and musicologists which may help in promotion and propagation of Khayal genre among the masses. Scholar believes that this thesis will play an important role in determining the future of Khayal.

(3)

नाम	डॉ. प्रियंका अरोड़ा
शोध विषय	तबला वादन के सन्दर्भ में पंजाब एवं दिल्ली घराने की वादन शैली – तुलनात्मक अद्ध्ययन
विश्वविद्यालय	गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर
अवार्ड	10.11. 2016
शोध निर्देशक	प्रो. (डॉ.) गुरप्रीत कौर
Email	prianka.arora7@gmail.com

प्रत्येक घराने की रचनाओ, वादन शैली एवं बोलों की निकास विधि में विशिष्टता एवं विलक्षणता होती है. यद्यपि तबले पर बजने वाले वर्ण, अक्षर, पटाक्षर समान हैं परन्तु फिर भी इनकी वादन शैली में पृथकता है, जिसके फलस्वरूप कला प्रस्तुतिकरण में उस विशिष्ट कलाकार की अपनी सृजनशीलता, रचनात्मकता एवं कला कौशल के दर्शन होते है.

प्रस्तुत शोध की प्रासंगिकता:

तबले वाद्य के घरानों को लेकर विश्वविद्यालयो में अनेको शोध कार्य हो चुके है. यह शोधकार्य दो विधियों से किये गए है - पहली स्वतंत्र रूप से किसी एक घराने को केंद्र बिंदु बनाकर और दूसरी – किन्हीं दो घरानों को लेकर उनका परस्पर तुलनात्मक अध्ययन करके. द्वितीय विधि के माध्यम से अजराड़ा एवं फर्रूखाबाद, लखनऊ एवं फर्रूखाबाद घरानों पर तुलनात्मक शोध कार्य हुआ है. प्रस्तुत शोध का चयन तबला के पंजाब एवं दिल्ली दोनों घरानों की समानताओं व असमानताओं को विस्तृत रूप से विश्लेषण एवं मूल्यांकन करने की दृष्टि से किया गया है. प्रस्तुत शोध कार्य की प्रासंगिकता को सुदृढ करने के उद्देश्य से उक्त दोनों घरानों के उपरोक्त पक्षों को उजागर एवं परिलक्षित करने का प्रयास किया गया है.

- प्रस्तुत शोधकार्य में तबला उत्पत्ति एवं विकास, घराना परम्परा के सन्दर्भ में तबला के विविध घरानों की परम्परागत विशेषताओं इत्यादि का विस्तृत विवेचन एवं रूपांकन किया गया है.
- शोध प्रबन्ध में पंजाब एवं दिल्ली घराना की वादन शैलीगत विशेषताएँ बताते हुए दिल्ली घराना की वंशावली एवं शिष्य परम्परा, दिल्ली घराना के प्रतिष्ठित तबला वादकों के जीवनवृत्त एवं सांगीतिक उपलब्धियों को परिलक्षित किया गया है.
- शोध प्रबन्ध में पंजाब एवं दिल्ली घराना की वादन शैली का परस्पर तुलनात्मक विवेचन करते हुए विभिन्न दृष्टिकोण से जैसे हाथ का रखाव, बोलो का निकास, विस्तारशील रचना, (पेशकार, कायदा, रेला, लग्गी) एवं अविस्तारशील रचना (मोहरा, मुखड़ा, गत, टुकड़ा, परन) का विस्तृत वर्णन किया गया है.

सुझाव -

- तबले के उच्च श्रेणी के कलाकार अपनी सृजनात्मक क्षमता, कार्यकुशलता, कला साधना के माध्यम से इस पर नवीन प्रयोग करके इनको जन-जन तक पहुँचाने की क्षमता रखते है, इसलिए तबला वादन की रचनाओं को Music Therapy के रूप में भी स्थापित किया जा सकता है.
- भारतीय वाद्य वृन्द की परम्परा को समृद्ध और संरक्षित करने में दोनों घराने के कलाकार और शिक्षक अपनी भी विशिष्ट भूमिका एवं योगदान दे, तो सामान्य एवं जनरुचि को प्रोत्साहित किया जा सकता है.
- चलचित्र जगत में तबला वाद्य की एक विशिष्ट भूमिका एवं स्थान है। सुगम संगीत के साथ जुड़कर तबला वाद्य लोकप्रियता में बढोत्तरी कर सकता है, और इन घरानों के कलाकार अपनी जीविकोपार्जन में सक्षम हो सकते है.
- दोनों घरानों की परम्परागत विशेषताओं को सीखने के पश्चात् विद्यार्थी यदि इसके ज्ञान को निष्ठापूर्ण, आत्मसात करें तो निसंदेह उनके जीविकोपार्जन क्षेत्र व्यापक हो सकते है। इससे रोजगार के नए आयाम भी प्राप्त किये जा सकते है. अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी वे कलाकार अपने कार्यक्रमों के माध्यम से एक सम्मानीय स्थान, पदवी पर पहुँच सकते है.
- तबले के घरानों की बंदिशों को यदि संस्थागत शिक्षण में समाविष्ट किया जाये तो उन्हें लुप्त होने से बचाया जा सकता है, जिससे उनकी लोकप्रियता में भी वृद्धि हो सकेगी.

भविष्य में अनुसन्धान हेतु नवीन सम्भावनाएं

- तबला के प्रमुख घरानों की विस्तारशील रचनाओ का सांगीतिक विश्लेषण
- तबला के प्रमुख घरानों की अविस्तारशील रचनाओं का समीक्षात्मक अध्ययन
- संस्थागत शिक्षण परम्परा में तबला वाद्य की प्रासंगिकता, प्रयोग एवं उपादेयता-विश्लेष्णात्मक अध्ययन
- तबला वाद्य में फ्यूजन का समावेश-प्रासंगिकता एवं प्रयोग.
- तबले के विविध घरानों में उपलब्ध ध्वनियांकित बंदिशों का विश्लेषण एवं मूल्यांकन.

संबंधित पुस्तक प्रकाशन –

"तबला वादन परम्परा में पंजाब एवं दिल्ली घराना"
लेखक - (डा॰) प्रियंका अरोड़ा प्रो॰ (डा॰) गुरप्रीत कौर
प्रकाशक – यूनिस्टार बुक प्राइवेट लिमिटेड, मोहाली, चंडीगढ़
Email: unistarbooks@gmail.com
Website: www.unistarbooks.com
Ph.91-172-5027427, 5027429

(4)

नाम	डॉ. शिखा मेहरा
शोध विषय	उत्तर भारतीय संगीत में राष्ट्र समर्पित गीतों का साहित्यिक एवं सांगीतिक विश्लेषण
विश्वविद्यालय	संगीत विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर
अवार्ड	14.09.2017
शोध निर्देशक	डॉ. राजेश शर्मा
Email	nanzkavya85@gmail.com

पीएच.डी. शोध प्रबंध, शीर्षक "उत्तर भारतीय संगीत में राष्ट्रीय समर्पित गीतों का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विश्लेषण" के अंतर्गत 'उत्तर भारतीय संगीत', 'राष्ट्र गीत' तथा 'राष्ट्र समर्पित गीत' एवं उसके इतिहास की संक्षिप्त जानकारी देते हुए उसका विषयगत अध्ययन किया गया है. राष्ट्र समर्पित गीतों के भिन्न- भिन्न विषय हो सकते हैं; यथा राष्ट्रभक्ति गीत, राष्ट्र वात्सल्य गीत, राष्ट्र एकता गीत, राष्ट्र महिमा गीत, राष्ट्र प्रगति गीत, राष्ट्रीय भाषा, राष्ट्रीय दिवस या राष्ट्रीय ध्वज से संबंधित गीत, आवाहन गीत, क्रांति या विप्लव गीत, अभियान या प्रगति गीत, प्रशस्ति गीत, राष्ट्रीय भौगोलिक परिस्थितियों को वर्णित करते गीत तथा क्षेत्रीय भाषाओं से संबंधित गीतों को इसके अंतर्गत संकलित किया गया है.

राष्ट्र समर्पित गीतों की प्रस्तुति, जोकि एकल गान, युगल गान, वृंद गान तथा वृंदवादन के द्वारा की जाती है, को दर्शाया गया है. इसी चरण में प्रस्तुतीकरण को दर्शाते हुए राष्ट्र समर्पित के प्रस्तुतीकरण के माध्यमों पर भी प्रकाश डाला गया है. प्रस्तुतीकरण के विभिन्न माध्यमों में सांगीतिक व स्थानक विषयों को आधार मानते हुए उन पर चर्चा की गई है. संगीत विषय में संगीत के विभिन्न प्रारूपों (शास्त्रीय, उप शास्त्रीय, लोक एवं चित्रपट) में आने वाली राष्ट्र समर्पण की भावना को उजागर करते हुए विभिन्न संगीत शैलियों का वर्णन किया गया है. स्थानक विषय के आधार पर शिक्षण संस्थाओं (विद्यालय, महाविद्यालय/विश्वविद्यालय) एवं अन्य संसाधनों (रेडियो/आकाशवाणी, दूरदर्शन, इंटरनेट, स्मारक, बॉर्डर, चुनावी दिन, बस स्टैंड, कंटीन, सिनेमाघर, बीटिंग द रिट्रीट समारोह, अंतरराष्ट्रीय खेल, डाक टिकट) के माध्यम से प्रस्तुत किए जाने वाले राष्ट्र समर्पित गीतों की जानकारी दी गई है

राष्ट्र समर्पित गीतों को सौन्दर्य की पराकाष्ठा तक पहुंचने में उसके साहित्यिक और सांगीतिक तत्वों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है. राष्ट्र समर्पित गीतों में समाविष्ट साहित्यिक तत्वों में सरल शब्दावली तथा चार प्रकार के रस, जिनमें वीर रस, करुण रस, वात्सल्य रस, व भक्ति रस को उजागर किया गया है. राष्ट्र समर्पित गीतों में निहित सांस्कृतिक तत्वों में राग, ताल व लय, वाद्य, हारमनी, आलाप, तान तथा तराना को संकलित करते हुए इन गीतों के सौंदर्य वृद्धि हेतु उनके प्रयोग को इंगित किया गया है.

राष्ट्र समर्पित गीत 'वंदे मातरम' की अलग-अलग धुनों को आधार मानते हुए सांगीतिक विद्यार्थियों व शोधार्थियों की इसके प्रति अभिवृत्ति को जानने का प्रयास किया गया है, जिसके लिए वंदे मातरम गीत पर निर्मित आठ विभिन्न धुनों को शामिल किया गया तथा उसी पर ध्यान केंद्रित करते हुए एक अंतिका को तैयार किया गया. इस अंतिका को संगीत के विद्यार्थियों व शोधार्थियों द्वारा भरवाए जाने के पश्चात उसका आकलन किया गया जिसके आधार पर यह निश्चित किया गया कि कौन सी धुन अत्यंत लोकप्रिय व प्रचारित है अथवा इससे अधिक पसंद किए जाने के पीछे विशेषता क्या कारण है. अंततोगत्वा प्रस्तुत अद्ध्ययन का सम्पूर्ण विश्लेषण SWOC (Strength, Weakness, Opportunities, Challenges) द्वारा उल्लेखित किया गया है.

संबंधित क्षेत्र में शोध कार्य का योगदान

प्रस्तुत शोध कार्य में शीर्षक के अनुरूप उसके वास्तविक प्रारूपों को उजागर किया गया है. इसको प्राथमिक व द्वितीयक श्रोताओं द्वारा सामग्री एकत्रित करने एवं संकलित करने के पश्चात इसे न्यायसंगिकता प्रदान की गई है. इस शोध प्रबंध में राष्ट्र समर्पित गीतों के साहित्यिक व सांगीतिक सौंदर्यीकरण को विश्लेषण करने अथवा उसे उभारने पर विशेषतया जोर दिया गया है और साथ ही साथ इसे मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण व SWOC द्वारा भी निश्चित करने का प्रयास किया गया है.

(5)

नाम	डॉ .पंकज कुमार उप्रेती	
शोध विषय	कुमाऊँ की रामलीला का शास्त्रीय रागों के परिप्रेक्ष्य में अद्ध्ययन	
विश्वविद्यालय	कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल	
अवार्ड	1999	
शोध निर्देशक	प्रो .देव सिंह पोखरिया	
Email	pankajupreti@gmail.com	

पहाड़ में रामलीला के बहाने शास्त्रीय संगीत का प्रचार- प्रसार दूरस्थ क्षेत्रों तक हुआ है. एकदम ग्रामीण परिवेश में रहने वाले भी रागों के नामों को और उनके गायन समय को जिस प्रकार बता देते हैं उस से सिद्ध होता है कि भारतीय शास्त्रीय संगीत की जड़ें कितनी गहरी है. प्रस्तुत शोध प्रबंध "कुमाऊँ की रामलीला का शास्त्रीय रागों के परिप्रेक्ष्य में अद्ध्ययन" के अंतर्गत पहाड़, रामलीला, शास्त्रीय संगीत तथा लोकरंजन के विविध पक्षों को एक सूत्र में बांधते हुए अध्ययन किया गया है. रामायण महाकाव्य में जहां संगीत के संबंध में तत्कालीन वाद्य यंत्रों व गायन के संबंध में काल पात्र व स्थिति के अनुरूप वर्णन मिलता है वही गेय तत्वों की रचनात्मकता भी विद्यमान है. बाल्मीकि रामायण में जननायक के रूप में जिस मर्यादा पुरुषोत्तम राम का चित्रण किया गया है. उसने बाद में लिखे गए तमाम महाकाव्यों, गीतिकाव्य एवं लोकगीतों को प्रभावित किया. इसी से होते हुए हमारी लोकनाट्य विधाओं की शैलियां दिखाई देती हैं.

ऐतिहासिक एवं अलंकृत काव्य की दृष्टि से रामायण की महत्ता ही नहीं है अपितु वह भारत वासियों का एक आचरणशास्त्र भी है. तुलसीकृत रामचरितमानस सहित तमाम काव्य राम के उदात्त चरित्र को लेकर लिखे एवं गाए जाते रहे हैं. यहीं से संगीत और अभिनय के माध्यम से रामचरित को जन-जन तक पहुंचाने में सहायता मिली और लोक संस्कृतियों में उसका समावेश हुआ. अभिनय और संगीत को बदलते सामाजिक परिवेशों ने प्रभावित किया और पारसी थियेटर का प्रभाव भारतीय नाट्य कला में पड़ा. लोकरंजन के साथ जन- जन तक ऐसे आदर्श व्यक्तित्व की गाथा पहुंचाने की परंपरा में रामायण और महाकाव्य ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. इसी के सहारे हमारे अभिनय, संगीत, चरित्र तथा स्थानीय स्थितियों के अनुरूप चलते रहे. पारसी थियेटर से प्रभावित होकर भारतवर्ष के उत्तराखंड राज्य के अंचल में भी रामलीला मंचन का प्रादुर्भाव हुआ जो यहां की संस्कृति व परंपरा का एक अंग बन गया है.

कुमायूं की रामलीला का मंचन केवल संवाद और अभिनय नहीं है. इसमें राम काव्य की सांगीतिक दृष्टि से विवेचन की भी जरूरत है. शास्त्रीय संगीत के निकट रहने की भूमिका इसमें स्पष्ट है, यानी लोक का शास्त्र हमारे शास्त्रीय पक्ष को किस प्रकार ग्रहण करता है, वह इसमें दिखाई देता है. शास्त्रीय रागों के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करने पर पता

चलता है कि इसमें लोकधुनों की बजाए रागों के करीब जाने की प्रवृत्ति है. भैरवी, ख़माज, सिंध भैरवी, गारा, मांड, विहाग, पीलू, जयजयवंती, बिलावल सहित मिश्रित रागों का अद्भुत संयोग है.

कुमाऊं की रामलीला का शास्त्रीय रागों के परिपेक्ष में अध्ययन करने के पश्चात सुझाव हैं – 1. संसाधनों की बढ़त हो तो शास्त्रीय संगीत की ओर अभिरुचि रखने वाले इसमें जुड़ते रहेंगे. 2. गणितीय हिसाब से हमारे जो राग हैं, उनका गणितीय विधान से किस प्रकार लोकशास्त्र में प्रयोग हुआ है, इसका पता चलेगा. 3. वर्तमान में मनोरंजन का स्तर गिरता जा रहा है, ऐसे में राम के चरित्र को लेकर गीत - संगीत का जो अभिनव प्रयोग कुमाऊ की रामलीला के रूप में दिखाई देता है, इसे बढ़ावा देना चाहिए.

सम्बंधित पुस्तक प्रकाशन –

"कुमाऊँ की रामलीला: अद्ध्ययन एवं स्वरांकन"
लेखक - डॉ .पंकज उप्रेती
प्रकाशन – पिघलता हिमालय, जे.के. पुरम,
सेक्टर- डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी
जिला – नैनीताल, उत्तराखण्ड

(6)

Name	Dr. Surekha Rani
Title of the Thesis	Tansen's Life History, His Musical Compositions and contribution to Indian Music and its significance to present day North Indian Music.
University	The Maharaja Sayajirao University of Baroda Vadodara, Gujarat.
Date of Award	6-02-2015
Supervisor	Dr. Ashwini Kumar Singh
Email	surdin.music@gmail.com

Main Features of Thesis:

No one has become a great singer like Tansen in the world of music since thousands of years. His popularity has not been decreased even after these many years. His contribution is valuable from many different angles in the field of music. Like any popular personality, many legends are famous about visionary Tansen. Researchers of these legends can definitely find those formulae so that co-ordination of their Chronicle can be set.

Researcher has tried to find true information about the life of Tansen and his contribution to music during this research work.

The main purpose of this research work is to highlight the different aspects of conventional Dhrupad work of Tansen and to present changing face of Dhrupad singing to modern singing. Conventional singing style of Tansen and some Dhrupad with notation is presented in detail in the present research work.

Contribution of Research Work:

The researcher has tried to put forward the comparison of Dhrupada's with the present day Khayal's. A brief description of conversion of Dhrupada's into Khayal's Gayaki. From the various reviews, books, field visits and articles on Tansen's life history, the researcher has tried to evolve the present thesis to bring forth Tansen's contribution in Indian music and the raga's composed by him with a reflection of his work in that era and its implications in today's musical society. Future generation will get information about different aspects of Tansen's composition through this research work.